



(समय : सुबह ९.०० से ११.१५)

सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ मार्च, २०२२ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएंगे। मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे। परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद्द मानी जाएगी। एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद्द मानी जाएगी। काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे। अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे। अभ्यास क्रम में शामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें। परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है।

(कुल गुणांक : ७५)

विभाग - १ : नीलकंठ चरित्र - पाँचवां संस्करण, दिसम्बर - २०१८

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसे और कब कहता है, यह लिखिए। [९]

१. "राजकुमार और राजकुमारी ने भी व्रत लिया है।"
२. "जिस ईश्वर ने जन्म दिया है, वही पोषण भी करता रहता है।"
३. "अब मैं आगे नहीं जाने दूँगा।"

प्र. २ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए चोरस कोष्ठक में सही (✓) का निशान करें। [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सभी सही विकल्पों के आगे ही सही का निशान किया होगा तो ही पूर्ण गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

१. जमादार को समाधि लग गई
(१) ☐ मुरशिद भूमि पर बैठें
(२) ☐ रामानंद स्वामी की कृपादृष्टि से समाधि लग गई।
(३) ☐ वसिष्ठ ऋषि ऊँचे आसन पर बिराजमान होते थे।
(४) ☐ श्रीराम भूमि पर बिराजमान होते थे।
२. नीलकंठवर्णी के बायें चरण में कौन कौन से चिह्न थे?
(१) ☐ जामुन
(२) ☐ कलश
(३) ☐ मीन
(४) ☐ केतू

प्र. ३ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। [४]

१. जूनागढ में गंगा में नीलकंठ ने संन्यासीओं को के रूप में दर्शन दिया।
२. जयरामदास के लिए प्रतिदिन का फल लाता था।
३. से कुरजी दवे का संदेश लेकर लोज आए।
४. बदरीनाथ में के दर्शन करके राजा प्रभावित हुए।

प्र. ४ निम्नलिखित किसी भी एक प्रसंग पर १५ पंक्ति में संक्षिप्त नोंद लिखिए। (वर्णनात्मक) [५]

१. रामानंद स्वामी का जीवन चरित्र
२. वन विचरण का संकेत
३. मानसपुर में असुरों का नाश

प्र. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। [५]

१. श्रीपुर में किसने और क्यों तप किया?
२. लखुबाई किस की शिष्या थी?
३. नीलकंठवर्णी को दीक्षा देकर रामानंद स्वामी ने कौन-कौन से नाम घोषित किये?
४. प्रेमजी ठक्कर के पास आकर नीलकंठवर्णी ने क्या कहा?
५. तपस्वी नीलकंठवर्णी में क्या देखने लगे?

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. नीलकंठवर्णी ने तोताद्रि में जियर स्वामी को प्रश्न पूछा।
२. संयोगी साधु नीलकंठवर्णी को कृष्णमंदिर में ले आये।
३. भूत डर से भाग निकले।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग- १ - द्वितीय संस्करण, अक्टूबर - २०१५

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसे और कब कहता है, यह लिखिए। [९]

१. "लाल अर्थात् आत्मा। आत्मारूप होकर भगवान की भक्ति करना।"
२. "यदि आप यहाँ पर अपनी कोई स्मृति छोड़कर नहीं जाएँगे, तो इस लोक में आपका आगमन असफल कहा जाएगा।"
३. "मनुष्य स्वरूप धारण करके इस समय वे पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं।"

प्र. ८ निम्नलिखित विषय पर सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को यथार्थ घटनाक्रम के अनुसार लिखिए। [६]

विषय : देवानंद स्वामी मूली मंदिर में

१. उनके आशीर्वाद से ही उमाशंकर कवीश्वर बने। २. उनके उपदेश प्रधान कीर्तनों में ज्ञान की अधिक झलक मिलती है। ३. दूसरे दिन मेराई भक्त ने अपने घर की दहलीज पर कंकु के पाँच पदचिह्नों को देखा। ४. देवानंद स्वामी के कीर्तन सुनकर नानालाल उनके शिष्य बन गए। ५. मूली मंदिर का अधूरा कार्य उन्हीं के हाथों पूर्ण हुआ। ६. उनके कीर्तन 'देवानन्द स्वामी के दृष्टांतों' से सम्प्रदाय में अधिक प्रसिद्ध हैं। ७. मेरे लिए विमान तैयार रखना। ८. तुम्हारे घर की दहलीज पर कंकु के पाँच पदचिह्न दिखेंगे, तो सच मानना। ९. प्रेमानन्द स्वामी के पास रहकर वे पिंगल शास्त्र एवं गायनविद्या सीखने लगे। १०. ब्रह्मानन्द स्वामी के अक्षरवास के पश्चात् देवानंद स्वामी मूली मंदिर के महंत पद पर नियुक्त किए गए। ११. देवानंद स्वामी का जन्म संवत् १८६० की कार्तिक पूर्णिमा को हुआ था। १२. मंदिर को अत्यधिक विकसित किया।

(१) केवल सही क्रमांक :

(२) यथार्थ घटनाक्रम :

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे।
(२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

प्र. ९ जितेन्द्रिय पुरुष झीणाभाई - प्रसंग पर १५ पंक्ति में संक्षिप्त नोंद लिखिए। (वर्णनात्मक)

[५]

प्र. १० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए।

[४]

- हरिभक्तों के आदर पात्र निर्गुणस्वामी कैसे बनकर रहते थे?
- देवीदान को क्या इच्छा थी?
- ब्रह्मानंद स्वामी ने श्रीहरि के स्वरूप सम्बंधी कितने कीर्तनों की रचना की थी?
- रामानन्द स्वामी ने अपनी गद्दी किसको प्रदान कर दी थी?

प्र. ११ निम्नलिखित वाक्य में से गलत शब्द को सुधारकर विषय के अनुलक्ष्य में सही वाक्य लिखिए।

[४]

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे। अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : स्वामीश्री योगीजी महाराज के अक्षरधामगमन के पश्चात् ६० वर्ष की उम्र में ईश्वरभाई ने प्रमुखस्वामी महाराज के करमकमलों से पार्षदी दीक्षा ग्रहण की।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : स्वामीश्री शास्त्रीजी महाराज के अक्षरधामगमन के पश्चात् ७० वर्ष की उम्र में आशाभाई ने योगीजी महाराज के करमकमलों से भागवती दीक्षा ग्रहण की।

- भक्तराज जोबनपगी : सुंदर को अधिक जल्दबाजी लगी थी। वह सुबह में अकेले ही दरबार की गली में जा पहुँचा। रणछोड़भाई की ड्योढ़ी के द्वार को उसने धीरे से धकेला, परन्तु खड़खड़ाहट की आवाज निकल पड़ी। परिणाम स्वरूप श्यामजी जाग उठे।
- स्वामी यज्ञप्रियदासजी : किसी जहरीले बीछू ने डंस लिया था। जिसके परिणाम स्वरूप कल ही मोतीभाई की मृत्यु हो गई। ईश्वरभाई के लिए वह असहनीय समाचार था। सभी लोगों को धीरज देने के बावजूद ईश्वरभाई के अंतर्मन में अशांति फैल गई।
- सद्गुरु ब्रह्मानन्द स्वामी : भगवान स्वामिनारायण ने पंचाला में बीमारी ग्रहण कर ली। वे मूलजी ब्रह्मचारी को प्रतिदिन स्वयं बुलाते, उनकी प्रशंसा करते और ठाकोरजी के भोजन के थाल से उन्हें प्रसादी देते थे। धीरे-धीरे ब्रह्मचारी को शंका होने लगी।
- सद्गुरु शुकानंद स्वामी : शुकानन्द स्वामी, अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी से उम्र में १६ मास छोटे थे। उनके शरीर की प्रकृति अत्यन्त ही नाजुक थी। संवत् १९२६ के मगसिर कृष्णपक्ष छठ को गढ़डा में उन्होंने शरीर-त्याग कर दिया।

प्र. १२ निम्नलिखित वाक्यों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में)

[४]

- निर्गुणदास स्वामी बाते और पत्र लिखकर नए मुमुक्षुओं को पुष्ट करते रहते थे।
- हरिभक्तों को सहकारी भावना से खेती करने का आदेश दिया।

विभाग - ३ : निबंध

प्र. १३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए।

[१०]

- प्रमुखस्वामी महाराज का अनोखा प्रदान : परम पूज्य महंत स्वामी महाराज (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) सीतम्बर-अक्टूबर-२०१६, पा.नं. १६०-१६२)
- स्वामी की बातें : भगवान को जीतने का उपाय (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अक्टूबर-२०१८, पा.नं. २०-२१)
- परब्रह्म स्वामिनारायण प्रबोधित सिद्धांत का नामाभिधान की पहेचान (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अक्टूबर-नवम्बर-२०१७, पा.नं. ५-११, ४६)



अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के मुख्य परीक्षा के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं।

<http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx>

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૨૨ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે

નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૨૨ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પુછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) જૂના ‘સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ’માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. **ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે :** આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the list of essays will be asked in the Final Examination of March-2022.

સત્સંગ પ્રવેશ

નિબંધ - ૧

પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું અનોખું પ્રદાન: પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ

જગવિખ્યાત બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના અધ્યક્ષ અને અસંખ્ય લોકોના પ્રેરણામૂર્તિ ગુરુદેવ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું એક અનુપમ પ્રદાન એટલે પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ.

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આધ્યાત્મિક અનુગામી તરીકે બિરાજમાન પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજનું દીક્ષિત નામ છે - સાધુ કેશવજીવનદાસજી.

મૂળ ચરોતર પ્રદેશના આણંદના વતની અને વ્યવસાય માટે મધ્યપ્રદેશમાં જબલપુર સ્થાયી થયેલા પાટીદાર શ્રી મણિભાઈ નારણભાઈ પટેલ અને ડાહીબાના ખોળે તેમનો જન્મ જબલપુરમાં તા. ૧૩-૮-૧૯૩૩ના રોજ થયો હતો. યોગાનુયોગ આ બાળકના જન્મ સમયના થોડા જ દિવસો બાદ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના સંસ્થાપક બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ જબલપુર પધાર્યા હતા. તેમણે આ નવજાત શિશુને સ્વામિનારાયણીય પંચવર્તમાન ધરાવી આશીર્વાદ વરસાવતાં કહ્યું: ‘મણિભાઈ, તમારો આ પુત્ર મોટો થઈને સત્સંગની ખૂબ મોટી સેવા કરશે.’ એ સમયે શાસ્ત્રીજી મહારાજે આ કૃપાપાત્ર બાબતની નામ ‘કેશવ’ આપ્યું હતું. જો કે પરિવારજનો બાળકને તેના હુલામણા નામ વિનુ તરીકે બોલાવતા હોવાથી, એ જ લાડકવાયું નામ સૌની જીભે કાયમ રહ્યું.

જબલપુરમાં ઉછેર અને પ્રાથમિક-માધ્યમિક શિક્ષણ પામેલા વિનુભાઈએ સ્થાનિક અંગ્રેજી માધ્યમની શાળા ‘કાઈસ્ટયર્ચ બોય્ઝ સ્કૂલ’માંથી કેમ્બ્રીજનો અભ્યાસ કર્યો હતો. એક તેજસ્વી વિદ્યાર્થી તરીકે તેઓ સૌના પ્રિય બન્યા હતા. સન ૧૯૫૧-૫૨માં તેઓને પોતાના વતન આણંદમાં જ, બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના આધ્યાત્મિક અનુગામી ગુરુદેવ બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજનો યોગ થયો. એક પ્રખર તર્કશીલ અને બૌદ્ધિક અભિગમ ધરાવતા વિનુભાઈના હૈયે અધ્યાત્મ અને ધર્મબીજ જન્મજાત હોવા છતાં, એમના હૃદયને એવા મહાન પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવની અપેક્ષા હતી જે એમની તર્કશીલ બુદ્ધિમત્તાને સંતુષ્ટ કરે.

પરંતુ યોગીજી મહારાજની દિવ્ય આધ્યાત્મિક પ્રતિભા અને નિર્વ્યાજ વાત્સલ્યવર્ષાએ એમને એવી દિવ્ય અનુભૂતિ કરાવી, જે તર્કથી અનેકશઃ ઉપર હતી. સન ૧૯૫૧-૫૨ના અરસામાં નવયુવાન વિનુભાઈના હૃદયને યોગીજી મહારાજે દિવ્યતાથી ઝંકૃત કરી દીધું. અને તેઓ સદાને માટે યોગીજી મહારાજના સમર્પિત શિષ્ય બની રહ્યા. યોગીજી મહારાજની એ પ્રેમવર્ષાએ જ એમને સાધુદીક્ષા લેવા માટે પ્રેર્યા.

સન ૧૯૫૬માં આણંદ ખાતે એગ્રિકલ્ચરલ યુનિવર્સિટીમાંથી સાયન્સ ગ્રેજ્યુએશન પૂર્ણ કરી તેઓ યોગીજી મહારાજનાં ચરણે સમર્પિત થઈ ગયા. મહા સુદ બીજ, તા. ૨-૨-૧૯૫૭ના માંગલિક દિને બ્રાહ્મમૂહુર્તમાં અક્ષરદેરીમાં યોગીજી મહારાજે તેમને પાર્શ્વદી દીક્ષા આપી, વિનુભગત નામ ધારણ કરાવ્યું એ યોગીજી મહારાજના આનંદની સર્વોચ્ચ એક ક્ષણ હતી. પોતાના માનસપુત્ર તરીકે વિનુભગત પર યોગીજી મહારાજની અપાર પ્રસન્નતા વરસી ગઈ. એક વખત યોગીજી મહારાજ દીક્ષા

લેવાની ભાવનાવાળા અન્ય યુવકોને સંબોધતાં બોલી ઊઠ્યા હતા: ‘વિનુભાઈને લઈને ૫૧ યુવકો થશે. એ પુણ્ય એમને મળશે. પહેલા નંબરમાં ઈ!’

પાર્ષદ તરીકે દીક્ષા આપ્યા બાદ યોગીજી મહારાજે પોતાની સાથે વિચરણ તથા પત્રલેખનની સેવામાં જોડ્યા. સતત ચાર વર્ષ સુધી પોતાની સાથે રાખીને યોગીજી મહારાજે વિનુભગતનું અનોખું આધ્યાત્મિક ઘડતર કર્યું.

તા. ૧૧-૫-૧૯૬૧ના રોજ તીર્થધામ ગઢડા ખાતે યોગીજી મહારાજે એક સાથે ૫૧ સુશિક્ષિત નવયુવાનોને ભાગવતી દીક્ષા આપી ત્યારે વિનુભગતને ‘કેશવજીવનદાસ સ્વામી’ નામ ધારણ કરાવ્યું. એ સમયે સૌને, શાસ્ત્રીજી મહારાજે બાળવયે તેમને આપેલા ‘કેશવ’ નામનું અનુસંધાન સ્વતઃ જોડાઈ ગયું!

આ નવદીક્ષિત યુવાનોને યોગીજી મહારાજે મુંબઈ ખાતે સંસ્કૃતના અધ્યયન માટે મૂક્યા ત્યારે એ સૌના મહંત તરીકે કેશવજીવનદાસ સ્વામીને મૂક્યા, ત્યારથી તેઓ ‘મહંત સ્વામી’ના નામે સૌમાં વિશેષ આદરણીય બન્યા. યોગીજી મહારાજે સૌ નવદીક્ષિત સંતોને અવારનવાર પત્રો લખીને મહંત સ્વામીનો વારંવાર મહિમા સમજાવતાં લખતા: ‘મહંત સ્વામીની આજ્ઞામાં સૌએ રહેવું... મૂંઝવણ થાય તો મહંત સ્વામીને કહી દેવું. ઈ જ્ઞાનનું એવું ઈન્જેક્શન દઈને મૂંઝવણ ટાળી નાંખે.’

તપ, વ્રત, સંયમ, ભક્તિ, સાધુતા, વિનમ્રતા, સરળતા ને બુદ્ધિમત્તા વગેરે અનેક સદ્ગુણો અને સેવામય જીવનથી તેઓ બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજની સતત પ્રસન્નતા પામતા રહ્યા.

સન ૧૯૬૯માં પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો ૪૮મો જન્મજયંતી મહોત્સવ મુંબઈ ખાતે યોગીજી મહારાજની હયાતીમાં ઊજવાયો તે પ્રસંગે સૌને સંબોધતાં પ્રમુખસ્વામી મહારાજે કહ્યું હતું: ‘યોગીજી મહારાજે આ સંતો તૈયાર કર્યા છે તેથી મને ખૂબ શાંતિ રહે છે. મહંત સ્વામીનાં દર્શન કરતાં હૃદય ટાકું થઈ જાય છે. જેમ સદ્ગુરુ પુરુષોત્તમદાસ સ્વામી(ખાનદેશી)નાં દર્શન કરતાં સહુ સંતો-હરિભક્તોને ટાકું થતું, તેમ આજે મહંત સ્વામીનાં દર્શનથી થાય છે.’

સન ૧૯૭૧માં બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજે અક્ષરધામગમન કર્યું, ત્યારબાદ તેમના આધ્યાત્મિક અનુગામી પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજમાં પણ તેઓ એવા જ ગુરુભાવ સાથે સમર્પિત થઈને રહ્યા. સન ૧૯૫૧થી તેઓ પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પવિત્ર સાધુતા, અહંશૂન્ય અને સરળ ભગવન્મયતાથી પ્રભાવિત હતા જ, પરંતુ સન ૧૯૭૧થી તેઓ યોગીજી મહારાજના અનન્ય સ્વરૂપ તરીકે પ્રમુખસ્વામી મહારાજને નિહાળતા રહ્યા અને તેમની આજ્ઞાનુસાર દેશ-વિદેશમાં સત્સંગ-પ્રેરણા માટે વિચરતા રહ્યા.

પ્રમુખસ્વામી મહારાજની આજ્ઞા અનુસાર તેમણે બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાની અનેક સેવા-પ્રવૃત્તિઓમાં નેતૃત્વ પૂરું પાડીને સેવકભાવે અનન્ય સેવાઓ આપી. સંસ્થાના વિરાટ આંતરરાષ્ટ્રીય મહોત્સવો, અક્ષરધામ જેવાં મહાન સર્જનો, બાળ-યુવા-પ્રવૃત્તિઓ વગેરેમાં તેમનું યોગદાન અનન્ય રહ્યું છે.

તેમના ગહન ચિંતનશીલ વ્યાખ્યાનોએ લાખો લોકોને આધ્યાત્મિક પ્રેરણાઓ આપી છે; તેમની ભગવન્મય પ્રતિભા અને સાધુતાએ સંતો, હરિભક્તો અને અસંખ્ય ભાવિકોનાં જીવન પર ઊંડો પ્રભાવ પાથર્યો છે.

તા. ૨૦-૭-૨૦૧૨ના રોજ અમદાવાદ ખાતે પ્રમુખસ્વામી મહારાજે લખેલા એક પત્ર દ્વારા તેઓને પોતાના ભાવિ ઉત્તરાધિકારી તરીકે સ્થાપીને તેમને ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની ગુણાતીત ગુરુપરંપરાના છઠ્ઠા ગુરુદેવ તરીકે આદરણીય સ્થાન આપ્યું છે.

આથી, પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે વિસ્તારેલાં વિરાટ આધ્યાત્મિક અને સામાજિક કાર્યોના સૂત્રધાર તેમજ લાખો આબાલવૃદ્ધ ભક્તોના ગુરુદેવ તરીકે તેઓ સૌના વંદનીય આદર્શ બની રહ્યા છે. પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના પગલે પગલે તેઓ, બી.એ.પી.એસ.ના અસંખ્ય ભક્તો-ભાવિકોને ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે ચીંધેલા આધ્યાત્મિક માર્ગે વેગ આપી રહ્યા છે.

આવા ગુણિયલ ગુણાતીત ગુરુની ભેટ આપવા બદલ અસંખ્ય આબાલવૃદ્ધ હરિભક્તો ને સંતો અશ્રુભીની આંખે, કૃતજ્ઞતા અને કૃતાર્થતા સાથે પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો કોટિ કોટિ વંદન સહ આભાર માને છે... ◆

નિબંધ - ૨

ભગવાનને જીતવાનો ઉપાય

– પૂજ્ય કોઠારી ભક્તિપ્રિયદાસ સ્વામી

પ્રહ્લાદજીએ નારાયણ સાથે ઘણા દિવસ યુદ્ધ કર્યું પણ ભગવાન જિતાણા નહીં. પછે ભગવાને પ્રહ્લાદને કહ્યું જે, ‘યુદ્ધે કરીને હું જિતાઉં તેવો નથી. મને જીતવાનો ઉપાય તો એ છે જે, જીભે કરીને મારું ભજન કરવું, મનમાં મારું ચિંતવન કરવું ને નેત્રમાં પણ મારી મૂર્તિ રાખવી, એ પ્રકારે નિરંતર મારી સ્મૃતિ કરવી.

– અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી
(સ્વામીની વાતો: ૧.૩)

અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની બે વાતો પર આપણે મનન કરીએ. પ્રથમ વાતમાં સ્વામી કહે છે: ‘પ્રહ્લાદજીએ નારાયણ સાથે ઘણા દિવસ યુદ્ધ કર્યું પણ ભગવાન જિતાણા નહીં. પછે ભગવાને પ્રહ્લાદને કહ્યું જે, ‘યુદ્ધે કરીને હું જિતાઉં તેવો નથી. મને જીતવાનો ઉપાય તો એ છે જે, જીભે કરીને મારું ભજન કરવું, મનમાં મારું ચિંતવન કરવું ને નેત્રમાં પણ મારી મૂર્તિ રાખવી, એ પ્રકારે નિરંતર મારી સ્મૃતિ કરવી.’ એમ કહ્યું પછી એવી રીતે પ્રહ્લાદે અભ્યાસ કર્યો ત્યારે ભગવાન છ મહિનામાં વશ થઈ ગયા. માટે ભગવાનને રાજી કરવાને અર્થે આ ઉપાય સર્વોપરિ છે, તે શીખવો.’

કીડી ઉપર આખો લાડુ મૂકે તો દબાઈ જાય પણ લાડુના ટુકડા કરી તેની આગળ મૂકે તો આખો લાડુ ધીરે ધીરે ખાઈ જાય. તેમ આધ્યાત્મિક જ્ઞાન સમજવું ઘણું કઠણ છે. તે કોઈક બુદ્ધિશાળીને તર્ક દ્વારા સમજાય પણ બધાને સમજાય નહીં. ભગવાન સ્વામિનારાયણનો સર્વજીવ-હિતાવહ સિદ્ધાંત સર્વ લોકોને ભોગ્ય બનાવવા માટે અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ દૃષ્ટાંતો દ્વારા આધ્યાત્મિક જ્ઞાન સરળતાથી સૌને પીરસ્યું છે. જેમ મોઢામાં શીરાનો કોળિયો મૂકે ને સીધો પેટમાં ઊતરી જાય, ચાવવો પણ ન પડે તેમ આ જ્ઞાન દૃષ્ટાંતો દ્વારા સૌને સરળતાથી સમજાઈ જાય છે. દૃષ્ટાંતો દ્વારા સિદ્ધાંતને સ્ફુટ કરવાની સ્વામીની આ અપૂર્વ કળા છે.

રાવણ, હિરણ્યકશ્યપ, કંસ, આદિ મહાશક્તિશાળી હતા. તેમણે અજ્ઞાને કરીને ભગવાન સાથે યુદ્ધ કર્યું તો પણ સર્વશક્તિમાન ભગવાન કોઈથી જિતાયા નથી તો પ્રહ્લાદજી નારાયણ સાથે યુદ્ધ કરીને કેવી રીતે જીતી શકે? યુદ્ધ રૂપી મનસ્વી સાધનોથી ભગવાન ક્યારેય જિતાય નહીં.

પૂર્વે શૂરવીર રાજાઓ શત્રુને સામેથી લડવા માટે દારૂગોળો વગેરે આપે ને પછી તેની સાથે યુદ્ધ કરે તેમ સર્વસત્તાધીશ ભગવાને પોતાને જીતવાનો ઉપાય સામેથી મુમુક્ષુને બતાવ્યો છે. ‘જીતમ્ જગત્ કેન મનો હિ યેન’ અર્થાત્ ‘જેણે મન જીત્યું તેણે જગત જીત્યું.’ એટલે કે જગતને જીતવાનો ઉપાય મનને જીતવું તે છે. તેમ ભગવાનને જીતવાનો ઉપાય મન, કર્મ, વચને તેમનું સેવન કરવું તે છે. મને કરીને ભગવાનનું ચિંતવન કરવું, કર્મે કરીને ભગવાનની મૂર્તિ અંતરમાં ધારવી અને વચને કરીને ભગવાનનું ભજન કરવું, ભગવાનના મહિમાનું ગાન કરવું.

એકલું ચિંતન કે ધારણા કે ભજનથી ભગવાન ન જિતાય. ત્રણેય ઉપાય સાથે અજમાવવા પડે તો જ કાર્ય સિદ્ધ થાય. મનમાં ભગવાનનું ચિંતવન થતાં મનની શુદ્ધિ થાય છે તે અસ્થિર-ચંચળ મન સ્થિર થાય છે. નેત્રમાં ભગવાનની મૂર્તિ ધારતાં કર્મની શુદ્ધિ થાય છે. સત્કર્મ થયાં કરે છે ને દુષ્કર્મોથી દૂર રહેવાય છે. જિહ્વાથી ભગવાનનું નામસ્મરણ કે મહિમાનું ગાન થતાં

વચનની શુદ્ધિ થાય છે. ગ્રામ્યવાર્તાથી દૂર રહેવાય અને અખંડ ભગવાનનાં લીલાચરિત્રનું ગાન થયા કરે. આમ ત્રણેય પ્રકારે ભગવાનમાં જીવની વૃત્તિ-પ્રજ્ઞા સ્થિર થતાં ગીતામાં જણાવ્યા પ્રમાણે તે સ્થિતપ્રજ્ઞ બને છે.

કોઈ દરરોજ એક જગાએ પાણીનો ઘડો ઢોળે તેણે કરીને પાણી ન ભરાય. કારણ કે આગળના દિવસનું જળ બીજા દિવસે સુકાઈ જાય ને પાછલા દિવસનું પછીના દિવસે સુકાઈ જાય, પણ આંગળી જેટલી પાતળી પાણીની સેર સતત વહ્યા કરે તો ત્યાં પાણીનો ધરો ભરાય. તેમ નિરંતર સ્મૃતિ કરવા જણાવ્યું છે.

ભગવાનનું ચિંતવન કરે ને પછી વળી વિષયનું ચિંતવન કરે તો કર્યું, કારવ્યું ધૂળ-ધાણી થાય માટે તૈલધારાવૃત્તિ ભગવાનમાં રાખવી આવશ્યક છે.

પ્રહ્લાદજીએ ભગવાનના વચનમાં વિશ્વાસ રાખી તે મુજબ સાધન કર્યા તો ભગવાન સહજમાં વશ થઈ ગયા.

આવી સિદ્ધાંતની વાત સાંભળીને ‘તે બીજા માટે છે’ તેમ જાણી જવા દે તો પોતે કોરો રહી જાય. તેથી જ સ્વામીએ આ ઉપાય શીખવાનો આદેશ આપ્યો છે.

ગાયનું પાલન કરવું, દૂધ કાઢવું, દહીં મેળવવું, તેનું મંથન કરી માખણ મેળવવું ને તેને તાવી ઘી મેળવવું એ બહુ લાંબી પ્રક્રિયા છે, પણ એના કરતાં કોઈ સીધે સીધું ને તૈયાર ઘી આપે તો! તેમ શાસ્ત્રમાત્રનું દોહન કરી સારરૂપ આ સિદ્ધાંત, અનુભવી, ગુણાતીત, ધામરૂપ સંતે બતાવ્યો છે તે અત્યંત સરળ, શક્ય અને ઉત્તમ હોઈ મુમુક્ષુ જનોએ જીવનમાં આચરી છેલ્લો જન્મ કરી લેવો.

ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ એવી જ એક બીજી વાત માનવને સાચો માનવ બનાવવા માટે ઉચ્ચારી છે:

‘વિષયને માર્ગે આંધળા થવું, બહેરા થવું, લૂલા થવું, એમ થવું પણ આસક્ત ન થવું.’

અકસ્માતમાં માણસની આંખ ફૂટી જાય, માથામાં સખત ઈજા થાય કે પગ ભાંગી જાય તો માણસ સહેજે આંધળો થાય, બહેરા થાય કે લૂલો થાય પણ પોતાની મેળે ક્યારેય આંધળો, બહેરા કે લૂલો થવા ન જ ઈચ્છે. છતાં ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ ભૌતિક દૃષ્ટિએ નહીં પરંતુ એક અલગ અર્થમાં તેવું થવાની સલાહ આપી છે. કારણ કે તેવું કરવામાં માનવનું હિત સમાયેલું છે.

જો બાહ્ય રૂપમાં વૃત્તિ ચોંટી ગઈ હતી ને પાછી વાળી ન શક્યો તો પેલા સુથારે પોતાની બંને આંખો ગુમાવેલી. ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ આંખ ફોડી નાંખવાની વાત નથી કરી પણ આંખથી જોઈ શક્તા હોવા છતાં જરૂર જણાય ત્યારે આંખની વૃત્તિ ખેંચી લેવાની સલાહ આપી છે.

“શબ્દે માર્યા મરી ગયા ને શબ્દે છોડ્યા રાજ...” મુજબ દ્રૌપદીના શબ્દે મહાભારત સર્જાયું ને સીતાજીના શબ્દે રામાયણ થયું તેથી તેવા શબ્દો ન સાંભળવા. કાનથી સાંભળતો હોવા છતાં તેવા શબ્દોમાં વૃત્તિ જવા ન દેવી એટલે કે બહેરા થવાનું સ્વામી સૂચવે છે.

કામાસક્ત માણસોએ અધર્મનું આચરણ - પરસ્ત્રીગમન કરતાં પ્રાણ ગુમાવેલાના ઘણા પ્રસંગો બને છે. તેવી અધોગતિ ન થાય તે માટે, એવા માર્ગે ગતિ કરતા પગને રોકવા એટલે કે દોડી શક્તો હોવા છતાં લૂલા થવા સ્વામી આદેશ આપે છે.

ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની સાદી, સરળ, સચોટ, સાચી શીખ માનવ જીવનમાં ઉતારે તો વર્તમાન જગતમાં પ્રવર્તતા અનિચ્છનીય પ્રસંગો સંભવે ખરા? કોઈ કરોડપતિ વ્યસનથી બરબાદ થઈને રોડપતિ થાય ખરો? દારૂના સેવનથી શરીરનો બગાડ થતાં અકાળે દેહનો અંત આવે ખરો? પ્રયંડ યુવાશક્તિ સમાજોદ્ધારના કાર્યને બદલે સમાજને ઊંડી ગર્તામાં ખેંચી જાય ખરી? સંસ્કારહીન વ્યક્તિ, કુટુંબ, ગામ, દેશને પાયમાલ કરી શકે ખરી?

પંચવિષયથી થતી અધોગતિથી બચાવવા માટે ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ અન્ય શબ્દોમાં તે જ સલાહ આપી છે કે ‘વિષયનો સંબંધ થયા મોર્ય બકરાની પેઠે બીવું અને સંબંધ થાય તો ત્યાં સિંહ થવું.’ એટલે કે જેમ સિંહને જોઈ બકરી દૂર ભાગી જાય તેમ વિષયના માર્ગથી દૂર રહેવું અને જો કદાચિત્ વિષયનો યોગ થઈ જાય તો તેવા પ્રસંગે સિંહ થવું. સિંહ ગર્જના કરે ત્યારે વન્યપશુ ભાગદોડ કરે છે તેમ શૂરવીર થઈને વિષયને દૂર ભગાડી દેવા.

વર્તમાનકાળે એવા જ ગુણાતીત સંત પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અનુગામી મહંત સ્વામી મહારાજનું માર્ગદર્શન મેળવી, તે પ્રમાણે જ જીવન જીવીને છેલ્લો જન્મ કરીએ - અક્ષરધામની પ્રાપ્તિ કરીએ... ◆

નિબંધ - ૩

સ્વામિનારાયણીય દાર્શનિક સિદ્ધાંતનું નામાભિધાન: 'અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન' 'અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન'નો ઘોષણા પત્ર શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજનાં ચરણે અર્પણ

આ વસુંધરા પર અવતરીને અનેક પ્રદાનો આપનાર પરબ્રહ્મ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણનો એક મહાન ઉપકાર એટલે એમણે આપેલું મૌલિક તત્ત્વજ્ઞાન. વેદ-વેદાંતના સાર રૂપે તેમણે પોતાનું દાર્શનિક ચિંતન આપીને આવનારી અનેક પેઢીઓને એક સર્વોત્તમ આધ્યાત્મિક વાટ ચીંધી છે. આ તત્ત્વજ્ઞાન કે દર્શન એ કોઈ બૌદ્ધિક કસરત નહીં, પરંતુ અનેક મુમુક્ષુઓને મોક્ષ આપતી સંજીવની છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણનું એ તત્ત્વજ્ઞાન એટલે, 'અક્ષરરૂપ થઈને પુરુષોત્તમની ઉપાસના-ભક્તિ' કરવાનું ચીંધતું જ્ઞાન. આ જ્ઞાન સિદ્ધ કરવા માટે, એટલે કે અક્ષરરૂપ થવા માટે એમણે વચનામૃતના પાને પાને અક્ષરબ્રહ્મનો અપરંપાર મહિમા કહીને તેની અનિવાર્યતા ઉચ્ચારી છે. મુક્તિ માટે અક્ષરબ્રહ્મને એક અને અનન્ય માર્ગ તરીકે દર્શાવીને તેમણે પુરુષોત્તમના અદ્વિતીય સેવક એવા અક્ષરબ્રહ્મને પોતાના તત્ત્વજ્ઞાનમાં સર્વોપરી સ્થાન આપ્યું છે. એટલું જ નહીં, એ સર્વોપરી અક્ષરબ્રહ્મ તત્ત્વને મૂર્તિમંત સ્વરૂપે પોતાની સાથે આ વસુંધરા પર લાવીને ભગવાન સ્વામિનારાયણે સૌને તેની ઓળખ પણ કરાવી. પ્રસંગે પ્રસંગે તેમણે એ ઓળખ આપતાં કહ્યું હતું: 'આ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી એ જ સાક્ષાત્ અક્ષરબ્રહ્મ છે, અમારે રહેવાનું ધામ છે, તમારા સૌ માટે મુક્તિનું દ્વાર છે. તેમના જેવા થઈને તમારે પુરુષોત્તમ એવા અમારી ઉપાસના-ભક્તિ કરવી.'

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણનું આ તત્ત્વજ્ઞાન કોઈ બંધ પોથીનો વિષય નહીં, પરંતુ અસંખ્ય લોકોના જીવનમાં એક જિવાતું તત્ત્વજ્ઞાન બની રહ્યું છે. તેનું કારણ છે - તેમની અનુગામી ગુરુપરંપરા. એ પરંપરામાં સર્વપ્રથમ અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ આ તત્ત્વજ્ઞાનના પડછંદા ગુંજાવ્યા. એમના આધ્યાત્મિક અનુગામી બ્રહ્મસ્વરૂપ ભગતજી મહારાજે આ જ તત્ત્વજ્ઞાનની છડી પોકારી. પોતાના એ ગુરુ થકી આ તત્ત્વજ્ઞાનને બરાબર યથાર્થ સમજીને બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે તેનો પ્રચંડ ઉદ્ઘોષ કર્યો. વેદ-વેદાંત અને વચનામૃતોમાં રહેલાં અક્ષર અને પુરુષોત્તમનાં એ બે સર્વશ્રેષ્ઠ તત્ત્વોને એક જ શબ્દ રૂપે જોડીને 'અક્ષરપુરુષોત્તમ' સિદ્ધાંતનું પ્રવર્તન કરવાનું મહાન કાર્ય બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે કર્યું.

બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજે અને બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે એ 'અક્ષરપુરુષોત્તમ' સિદ્ધાંતના પ્રવર્તન માટે પોતાના સમગ્ર આયખાને સમર્પિત કરી દીધું.

આ તત્ત્વજ્ઞાનને શાસ્ત્રીય સ્વરૂપ આપવાનું મહાન યશસ્વી કાર્ય બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે કર્યું. પૂજ્ય ભદ્રેશદાસ સ્વામી પાસે ઉપનિષદ, બ્રહ્મસૂત્ર, ભગવદ્ગીતા પર ભાષ્યો રચાવીને તેમણે ભગવાન સ્વામિનારાયણના તત્ત્વજ્ઞાનને વિદ્વાનોના જગતમાં શાસ્ત્રીય સ્વરૂપે પ્રસ્તુત કર્યું. આ જ તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રાચીન ભારતીય પરંપરા અનુસાર 'વાદગ્રંથ' દ્વારા પ્રાચીન ભારતીય વાદશૈલીમાં પ્રસ્તુત કરવા માટે બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પૂજ્ય ભદ્રેશદાસ સ્વામીને આજ્ઞા કરી હતી. તેઓની એ ઈચ્છા અને આજ્ઞાથી રચાયેલો વાદગ્રંથ 'સ્વામિનારાયણ સિદ્ધાંતસુધા: પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શનમ્' તાજેતરમાં પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ મહંત સ્વામી મહારાજે ઉદ્ઘાટિત કર્યો.

ગ્રંથ વિમોચનનો આ અવસર અમેરિકા ખાતે અક્ષરધામ પરિસરમાં તા. ૧૭ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૧૭ના રોજ યોજાઈ ગયો.

પરંતુ આ ગ્રંથ-વિમોચનના દિને પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ મહંત સ્વામી મહારાજે, ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણના આ તત્ત્વજ્ઞાનના નામાભિધાનની એક વિશિષ્ટ ઘોષણા કરી. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણના આ મૌલિક તત્ત્વજ્ઞાનને એટલે કે સ્વામિનારાયણ વેદાંતને કયા એક નામથી ઓળખવું જોઈએ? એ સવાલનો ઉત્તર આપતાં પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજે સમગ્ર સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના આશ્રિતોને સંબોધીને તા. ૧૬-૮-૨૦૧૭ના રોજ પાંચ પાનાંનો એક વિસ્તૃત પત્ર લખ્યો હતો. આ પત્ર લખીને તેઓએ સ્વતઃ નિર્ણય કર્યો હતો કે આવનારી અનેક પેઢીઓ સુધી જગતના ચોકમાં જ્યાંથી ભગવાન સ્વામિનારાયણના તત્ત્વજ્ઞાનનો સદા ઉદ્ઘોષ થવાનો છે એવા અક્ષરધામના ગર્ભગૃહમાં તેનું પ્રથમ પઠન કરવું છે.

આથી, તા. ૧૭-૮-૨૦૧૭ના રોજ સાંજે ૪:૦૦ વાગ્યે એક વિશિષ્ટ અવસર અમેરિકાના રોબિન્સવિલ ખાતે અક્ષરધામના નિર્માણાધીન ગર્ભગૃહમાં યોજાઈ ગયો.

મધ્યાહ્ન પછીના વિશ્રામમાંથી વહેલાં જાગ્રત થઈને પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ અક્ષરધામના નિર્માણાધીન મુખ્ય ગર્ભગૃહમાં એ સ્થળે પધાર્યા જ્યાં શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ બિરાજમાન થવાના છે. બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અક્ષરધામમાં સ્થાપિત કરવા માટે શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજની ચલમૂર્તિ પ્રતિષ્ઠિત કરી આપી છે, તે સાક્ષાત્ અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજને અહીં ગર્ભગૃહમાં એ જ સ્થળે આસન ઉપર પધરાવવામાં આવ્યા હતા. સાથે બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજની મૂર્તિ પણ પધરાવવામાં આવી હતી. પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ, પૂજ્ય ઈશ્વરચરણ સ્વામી, પૂજ્ય આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામી, પૂજ્ય આત્મસ્વરૂપદાસ સ્વામી, પૂજ્ય ભદ્રેશદાસ સ્વામી, પૂજ્ય અક્ષરવત્સલદાસ સ્વામી વગેરે ઉપસ્થિત હતા. પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીનો ઉત્સાહ તો અનન્ય હતો.

વેદોક્ત વિધિપૂર્વક સંકલ્પવિધિ સાથે તેમણે શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું પૂજન કર્યું. સૌ વતી ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ મહંત સ્વામી મહારાજનું પૂજન કર્યું. મહંત સ્વામી મહારાજે ભદ્રેશદાસ સ્વામી દ્વારા લિખિત પ્રસ્થાનત્રયી ભાષ્યગ્રંથો તથા ‘સ્વામિનારાયણ સિદ્ધાંતસુધા’ ગ્રંથનું પૂજન કર્યું. ગ્રંથકર્તા પૂજ્ય ભદ્રેશદાસ સ્વામીને પણ ભાલમાં કુમકુમનો ચાંદલો કર્યો. ત્યારબાદ મહંત સ્વામી મહારાજે સ્વહસ્તે લખેલો ઘોષણા પત્ર શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ તથા પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં ચરણે અર્પણ કર્યો અને એ પત્ર ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીને આપીને શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ સમક્ષ તેનું પઠન કરવા માટે કહ્યું.

પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ પોતાની લાક્ષણિક શૈલીમાં પત્રનું પઠન કર્યું. ત્યારબાદ પત્રના મુખ્ય અંશનું પઠન કરતાં પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજે જણાવ્યું કે ‘શાસ્ત્રીજી મહારાજે જ પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના સકળ વિશિષ્ટ તત્ત્વજ્ઞાનને, તેમના સકળ વિશિષ્ટ સિદ્ધાંતોને કે પછી તેમના સકળ વિશિષ્ટ વેદાંતને અક્ષર અને પુરુષોત્તમ એવા બે શબ્દોને ભેગા કરી, તેને તાત્ત્વિક, વેદાંતિક અને દાર્શનિક સ્વરૂપ આપી તેને અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત, અક્ષર-પુરુષોત્તમ વેદાંત કે પછી અક્ષર-પુરુષોત્તમ દર્શન તરીકે પ્રસ્થાપિત કર્યો છે.

આથી બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે જ આપેલા આદેશ પ્રમાણે અને તેમણે જ આપેલા ‘અક્ષર-પુરુષોત્તમ’ એવા પ્રાસાદિક શબ્દ વડે, સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો તાત્ત્વિક સિદ્ધાંત એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત છે.

સ્વામિનારાયણ વેદાંત એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ વેદાંત છે અને સ્વામિનારાયણ દર્શન એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ દર્શન છે, એવા નામાભિધાન સાથે ઓળખવું. અને એથી જ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના આદેશ પ્રમાણે આ નામાભિધાન જ યાવચ્ચંદ્રદિવાકરૌ કાયમ રહેશે.’ મહંત સ્વામી મહારાજે કરેલી આ ઘોષણાને ઉપસ્થિત સંતોએ ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ના જયનાદો સાથે વધાવી લીધી. ત્યારબાદ ઉપસ્થિત ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી, આત્મસ્વરૂપદાસ સ્વામી, આનંદસ્વરૂપદાસ સ્વામી, ભદ્રેશદાસ સ્વામી, અક્ષરવત્સલદાસ સ્વામીએ પણ પ્રાસંગિક ઉદ્ઘોષ કરીને આ અવસરને વધાવી લીધો.

આ જ ઘોષણા પત્રને થોડાક જ કલાકો પછી હજારો ભક્તોની મેદની વચ્ચે પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ અને પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ પુનઃ ઘોષિત કર્યો અને જીવંત વેબકાસ્ટ દ્વારા સમગ્ર દુનિયામાં તે ઉદ્ઘોષ પ્રસારિત થયો. અમેરિકા અને વિશ્વભરમાં વ્યાપેલા હજારો ભક્તોએ ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ની આ ઘોષણાને વધાવી લીધી હતી.

આમ, વિધિવત્ પત્ર લખીને આ ઘોષણા સાથે પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજે સ્વામિનારાયણીય તત્ત્વજ્ઞાનને ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ તરીકે સદાને માટે ઘોષિત કર્યું. થોડાક દિવસો પૂર્વે શ્રી કાશી વિદ્વત્ પરિષદના મૂર્ધન્ય વિદ્વાનોએ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણના તત્ત્વજ્ઞાનને ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ તરીકે ઉદ્ઘોષિત કરીને આ જ ઘોષણાને જાણે આગોતરી

વધાવી લીધી હતી. આજનો આ અવસર સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય જ નહીં, પરંતુ ભારતીય તત્ત્વજ્ઞાનના ઇતિહાસમાં અમર બની ગયો. કારણ કે આજે સનાતન વૈદિક ધર્મની દાર્શનિક પરંપરામાં એક એવા વૈદિક તત્ત્વજ્ઞાનની વિધિવત્ ઘોષણા થઈ હતી, જેનાં મૂળ ઉપનિષદોમાં છે, બ્રહ્મસૂત્રો અને ભગવદ્ગીતામાં છે, ભગવાન સ્વામિનારાયણનાં વચનામૃતોમાં છે.

હવે પછી, ભગવાન સ્વામિનારાયણે પ્રબોધેલું મૌલિક તત્ત્વજ્ઞાન સદાને માટે ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ તરીકે ઓળખાશે. એ સ્વામિનારાયણ વેદાંત એટલે કે અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શનનો ઐતિહાસિક દિન ભારતીય તત્ત્વજ્ઞાનના ઇતિહાસમાં સુવર્ણ અક્ષરે લખાઈ ગયો.

(પૃષ્ઠ ૮થી ૧૧માં પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજ દ્વારા લિખિત ‘અક્ષરપુરુષોત્તમ દર્શન’ના એ ઘોષણા પત્રની પ્રસ્તુતિ છે.) ◆

સ્વામી-શ્રીજી

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ

પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત સિદ્ધાંતના નામાભિધાનની ઓળખ.

પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના આશ્રિતો પ્રતિ,

જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

ભારતવર્ષમાં જે પ્રસિદ્ધ વૈદિક સંપ્રદાયો છે તેમનાં તત્ત્વસિદ્ધાંતો, તેમનું વેદાંત અથવા તો તેમનું દર્શન, તે તે સંપ્રદાયના વિશિષ્ટ સિદ્ધાંતોના આધારે પ્રસ્થાપિત થયેલું હોય છે. તે સિદ્ધાંતોને, વેદાંતને અથવા તો દર્શનને વિશિષ્ટ નામાભિધાન સાથે ઓળખવામાં આવે છે. જેમ કે અદ્વૈત, વિશિષ્ટાદ્વૈત, દ્વૈત, શુદ્ધાદ્વૈત ઇત્યાદિ નામોથી તે તે સંપ્રદાયના સિદ્ધાંતોને, વેદાંતને કે દર્શનને ઓળખવામાં આવે છે.

આ જ રીતે પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત તાત્ત્વિક સિદ્ધાંત પણ અતિ મૌલિક અને અતિ વિશિષ્ટ હતો. તેમના આ સિદ્ધાંતને કયા નામાભિધાનથી ઓળખવા એ બાબતનો સ્પષ્ટ આદેશ આપણા સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયમાં બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ કરી ગયા છે. બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણના અખંડ ધારક અને સ્વામિનારાયણ ભગવાનને તુલ્ય સેવા કરવા યોગ્ય હતા.

આ આદેશ તેમણે સ્વામિનારાયણ ભગવાનના વચનોને આધારે, અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી મહારાજના વચનોને આધારે, સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો સાક્ષાત્ સમાગમ કરેલા સંતો-હરિભક્તો પાસેથી વારંવાર પ્રત્યક્ષપણે સાંભળીને તથા પરબ્રહ્મના સાક્ષાત્કારથી યુક્ત અને આથી જ પરબ્રહ્મના સ્વરૂપ સમાન બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુની પરંપરામાં આવેલ શ્રી ભગતજી મહારાજ થકી સાક્ષાત્ સાંભળીને પોતાની તટસ્થ બુદ્ધિથી, અને એથી વધીને સ્વાનુભવથી અને સ્વામિનારાયણ ભગવાને આપેલ સિદ્ધાંત પ્રત્યેની અત્યંત શુદ્ધભાવે યુક્ત પરાભક્તિથી કર્યો હતો. અમે કાંઈ કરતાં કાંઈ કરતા જ નથી. પરમ પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ સાક્ષાત્કારવાળા પુરુષના ઉચ્ચારેલા શબ્દોની ગોઠવણી જ કરીએ છીએ.

બોચાસણવાસી શ્રી અક્ષર-પુરુષોત્તમ સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના સ્થાપક બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે અતિ કરુણાએ કરીને પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત પરમ કલ્યાણપ્રદ સકળ ઉપદેશને અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત તરીકે જગજાહેર કર્યો છે. અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત એટલે મુમુક્ષુએ પોતાના આત્માને અક્ષરરૂપ થઈ દાસભાવે પુરુષોત્તમની ઉપાસના-ભક્તિ કરવાનો સિદ્ધાંત.

આ અક્ષરપુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત જ પરમાત્મા સહજાનંદ દ્વારા ઉપદિષ્ટ સકળ વચનામૃતોનો પરમ સાર છે અને પરમ રહસ્ય છે. આ અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત જ વેદ વેદાંતાદિક સકળ શાસ્ત્રોનો પરમ સાર છે અને પરમ રહસ્ય છે. આ અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત જ પરા વિદ્યા છે, અધ્યાત્મ વિદ્યા છે અને બ્રહ્મવિદ્યા છે.

પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના હૃદયગત સૈદ્ધાંતિક અભિપ્રાયના સાક્ષાત્કારના પ્રભાવે બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે પોતે જ પોતાના જ સંકલ્પથી પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાને આપેલ આ અલૌકિક સિદ્ધાંતનાં રક્ષણ, પોષણ અને સંવર્ધન માટે જ સંસ્થાની સ્થાપના કરી અને એ સંસ્થાનું નામકરણ પણ આ અક્ષરપુરુષોત્તમ સિદ્ધાંતના આધારે જ કર્યું. આથી બોચાસણવાસી શ્રી અક્ષર-પુરુષોત્તમ સ્વામિનારાયણ સંસ્થા એટલે પરબ્રહ્મ ભગવાન સ્વામિનારાયણ

પ્રબોધિત અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંતને વરેલી સંસ્થા છે.

તેમણે ગગનચુંબી મોટાં મંદિરો કરી તેના મધ્યખંડમાં અક્ષર અને પુરુષોત્તમની મૂર્તિઓનું પ્રસ્થાપન પણ આ સિદ્ધાંત માટે જ કર્યું હતું.

તેમણે જ પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના સકળ વિશિષ્ટ તત્ત્વજ્ઞાનને, તેમના સકળ વિશિષ્ટ સિદ્ધાંતોને કે પછી તેમના સકળ વિશિષ્ટ વેદાંતને અક્ષર અને પુરુષોત્તમ એવા બે શબ્દોને ભેગા કરી, તેને તાત્ત્વિક, વેદાંતિક અને દાર્શનિક સ્વરૂપ આપી તેને અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત, અક્ષર-પુરુષોત્તમ વેદાંત કે પછી અક્ષર-પુરુષોત્તમ દર્શન તરીકે પ્રસ્થાપિત કર્યો.

બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના આ સિદ્ધાંતિક કાર્યને જ યથાર્થ રીતે અને સંપૂર્ણપણે બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજે તથા બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અખિલ ભૂમંડળમાં વિસ્તાર્યું છે.

આથી બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે જ આપેલા આદેશ પ્રમાણે અને તેમણે જ આપેલા ‘અક્ષર-પુરુષોત્તમ’ એવા પ્રાસાદિક શબ્દ વડે,

સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો તાત્ત્વિક સિદ્ધાંત એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત છે.

સ્વામિનારાયણ વેદાંત એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ વેદાંત છે અને સ્વામિનારાયણ દર્શન એટલે અક્ષર-પુરુષોત્તમ દર્શન છે, એવા નામાભિધાન સાથે ઓળખવું. અને એથી જ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના આદેશ પ્રમાણે આ નામાભિધાન જ યાવચ્ચંદ્રદિવાકરૌ કાયમ રહેશે.

ઉપરોક્ત પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંત બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજની આજ્ઞાથી સાધુ ભદ્રેશદાસે લખેલ પ્રસ્થાનત્રયીનાં સ્વામિનારાયણ ભાષ્યો અને સ્વામિનારાયણ સિદ્ધાંતસુધા (પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ પ્રબોધિત અક્ષર-પુરુષોત્તમ દર્શનમ્) એ ગ્રંથોમાં યથાર્થ રીતે, સ્પષ્ટતાઓ સાથે અતિ પ્રમાણભૂત રીતે પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યો છે. આથી, વચનામૃત, સ્વામીની વાતો અને ગુરુપરંપરાના પ્રમાણિત થયેલા જીવન-ઉપદેશોના ગ્રંથો પછી સંપ્રદાયનાં દાર્શનિક-તાત્ત્વિક સિદ્ધાંતો અંગે આ શાસ્ત્રો યાવચ્ચંદ્રદિવાકરૌ આધારભૂત અને પ્રમાણભૂત ગ્રંથો રહેશે.

આ ભાષ્યો તથા સિદ્ધાંતસુધા ગ્રંથમાં પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણના હૃદયગત સિદ્ધાંત પ્રમાણે, બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુણાતીત ગુરુપરંપરાના જીવન-ઉપદેશોના આધારે, તેમજ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં રુચિ, અભિપ્રાય, માર્ગદર્શન અને આદેશ મુજબ જ સર્વે અર્થઘટનો લખાયાં હોવાથી તે સદાને માટે જેમ છે તેમજ રહેશે.

હવે પછી અક્ષર-પુરુષોત્તમ સિદ્ધાંતને નજર સામે રાખીને આ ગ્રંથોને આધારે ગોઠીઓ, ચર્ચાઓ, લેખો, પ્રવચનો, પુસ્તકો-ગ્રંથોના પ્રકાશનો વગેરે કરવું.

આ રીતે પરબ્રહ્મ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના આશ્રિતોએ સમજવું અને અન્ય મુમુક્ષુ જિજ્ઞાસુઓને સમજાવવું.

- સાધુ કેશવજીવનદાસ(મહંત સ્વામી મહારાજ)

૧૬મી સપ્ટેમ્બર ૨૦૧૭, રોબિન્સવિલ અક્ષરધામ,

સાંજે ૬.૧૬ વાગે.